Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-6* *June 2026***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

आधुनिक भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा आधुनिकीकरण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मुकुल कुमार

पूर्व अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा विभाग, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

Article Info: *(Recieved- 20/03/2026, Accept- 20/04/2026, Published- 05/06/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i6002

सारांश

इक्कीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा पारंपरिक सैन्य सुरक्षा से आगे बढ़कर बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसमें साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, तकनीकी आत्मनिर्भरता तथा आंतरिक सुरक्षा जैसे अनेक आयाम सम्मिलित हो गए हैं। भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न उसकी विदेश नीति, रक्षा नीति, आर्थिक विकास तथा राजनीतिक नेतृत्व से गहराई से जुड़ा हुआ है। बदलते वैश्विक शक्ति–संतुलन, आतंकवाद, सीमा विवाद, साइबर हमलों तथा इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा ने भारत को अपनी रक्षा नीति एवं सुरक्षा रणनीति का पुनर्गठन करने के लिए प्रेरित किया है। पिछले एक दशक में भारत ने रक्षा आधुनिकीकरण, स्वदेशी रक्षा उत्पादन, सैन्य प्रौद्योगिकी, सीमा प्रबंधन तथा संयुक्त सैन्य संरचना के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण सुधार किए हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान, Defence Acquisition Procedure (DAP) 2020, चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ की नियुक्ति, थिएटर कमांड की अवधारणा तथा रक्षा निर्यात को प्रोत्साहन जैसी पहलों ने भारत की रक्षा नीति को नया आयाम प्रदान किया है। इन सुधारों के पीछे राजनीतिक नेतृत्व की निर्णायक भूमिका रही है, जिसने राष्ट्रीय सुरक्षा को शासन की प्रमुख प्राथमिकताओं में सम्मिलित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य आधुनिक भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा तथा रक्षा आधुनिकीकरण के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना है। इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा की बदलती अवधारणा, भारतीय राजनीति की भूमिका, रक्षा सुधारों, आत्मनिर्भरता, सीमा सुरक्षा, समुद्री एवं साइबर सुरक्षा, रक्षा कूटनीति तथा भविष्य की चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति का प्रश्न नहीं, बल्कि सुशासन, तकनीकी विकास, आर्थिक सुदृढ़ता तथा प्रभावी राजनीतिक नेतृत्व का भी महत्त्वपूर्ण आधार बन चुकी है।

कुंजी शब्द– राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा आधुनिकीकरण, भारतीय राजनीति, रक्षा नीति, आत्मनिर्भर भारत, रक्षा उत्पादन, सीमा सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, रक्षा कूटनीति।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी संप्रभु राष्ट्र के अस्तित्व, अखंडता तथा विकास का मूल आधार होती है। पारंपरिक दृष्टि से राष्ट्रीय सुरक्षा का आशय बाह्य आक्रमणों से राष्ट्र की रक्षा तथा सीमाओं की सुरक्षा से लगाया जाता था, किंतु वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, आतंकवाद, साइबर अपराध, जैविक खतरों, जलवायु परिवर्तन तथा अंतरराष्ट्रीय शक्ति–संतुलन में परिवर्तन के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा अत्यंत व्यापक हो गई है। आज किसी राष्ट्र की सुरक्षा केवल उसकी सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी आर्थिक क्षमता, तकनीकी दक्षता, राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक समरसता तथा कूटनीतिक प्रभावशीलता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हो गई है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के साथ–साथ दक्षिण एशिया की प्रमुख सामरिक शक्ति भी है। इसकी लगभग 15,000 किलोमीटर लंबी स्थलीय सीमा तथा 7,500 किलोमीटर से अधिक समुद्री तटरेखा है। भारत की सीमाएँ चीन, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और म्यांमार जैसे देशों से जुड़ी हुई हैं। इनमें से चीन एवं पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद, सीमा पार आतंकवाद, अवैध घुसपैठ तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष निरंतर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती रही हैं। इसके अतिरिक्त हिंद महासागर क्षेत्र, इंडो–पैसिफिक, साइबर क्षेत्र तथा अंतरिक्ष भी भारत की सुरक्षा नीति के महत्त्वपूर्ण आयाम बन चुके हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की सुरक्षा नीति मुख्यतः रक्षात्मक एवं गुटनिरपेक्ष दृष्टिकोण पर आधारित थी। किंतु बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों, परमाणु शक्ति के विकास, कारगिल युद्ध, 26/11 मुंबई आतंकवादी हमले, गलवान घाटी की घटना तथा इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में उभरती सामरिक चुनौतियों ने भारत को अपनी रक्षा नीति में व्यापक परिवर्तन करने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप रक्षा आधुनिकीकरण, सैन्य संरचना में सुधार, संयुक्त कमान प्रणाली, आधुनिक हथियार प्रणालियों का विकास तथा स्वदेशी रक्षा उत्पादन पर विशेष बल दिया जाने लगा। समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा एक प्रमुख राजनीतिक एवं नीतिगत विषय बनकर उभरी है। आज रक्षा बजट, सीमा सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी रणनीति, साइबर सुरक्षा, रक्षा उत्पादन, अंतरिक्ष सुरक्षा तथा समुद्री शक्ति जैसे विषय केवल रक्षा मंत्रालय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि संसद, नीति–निर्माताओं, विदेश नीति विशेषज्ञों तथा राजनीतिक नेतृत्व के विमर्श का भी अभिन्न अंग बन चुके हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत रक्षा विनिर्माण में स्वदेशीकरण, निजी क्षेत्र की भागीदारी तथा रक्षा निर्यात को प्रोत्साहन देकर भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा एवं बदलता स्वरूप

परंपरागत रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा का अर्थ किसी राष्ट्र को बाह्य सैन्य आक्रमणों से सुरक्षित रखना तथा उसकी सीमाओं की रक्षा करना माना जाता था। इस दृष्टिकोण में सेना, हथियार, युद्ध क्षमता तथा सीमा सुरक्षा को ही राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रमुख आधार समझा जाता था। किंतु वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति, आर्थिक परस्पर निर्भरता, आतंकवाद, साइबर अपराध, जलवायु परिवर्तन, जैविक संकट तथा अंतरराष्ट्रीय शक्ति–संतुलन में परिवर्तन के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का दायरा अत्यधिक व्यापक हो गया है। आज राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति का विषय नहीं है, बल्कि आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, तकनीकी, पर्यावरणीय तथा मानवीय सुरक्षा भी इसके अभिन्न अंग बन चुके हैं।

'मैकियावेली' ने निश्चय ही राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिक राष्ट्रीय हितों के रूप में ही विश्लेषित किया है। पर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि राष्ट्रीय सुरक्षा वास्तविक लक्ष्य नहीं है और इनका औचित्य उन उच्चतर मूल्यों की प्राप्ति में ही सिद्ध करना चाहिए जिनकी रक्षा करना राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रयोजन है। इस प्रकार राष्ट्रीय हित राष्ट्रों के बीच स्पर्धा को जन्म देते हैं। प्रत्येक राष्ट्र को दूसरों के मुकाबले श्रेष्ठ सुरक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा को जन्म देकर असुरक्षा उत्पन्न करती है। राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति राष्ट्रों का यह दृष्टिकोण है कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष असीमित खतरों का अनुमान करता है। फ्रैंक ट्रेगर एवं फ्रैंक एल. सिमोनी के अनुसार– "राष्ट्रीय सुरक्षा सरकार की नीति का एक अंग है जिसका लक्ष्य अपने व्यापक राष्ट्रीय मूल्यों की अभिवृद्धि या रक्षा हेतु वर्तमान एवं सम्भावित प्रतिद्वन्द्वियों के विरुद्ध राष्ट्रीय एवं उन राष्ट्रीय परिस्थितियों को पक्ष में करना है।"

राष्ट्रीय सुरक्षा की आधुनिक अवधारणा को व्यवस्थित रूप से विकसित करने का श्रेय प्रसिद्ध सुरक्षा विशेषज्ञ बैरी बुज़ान को दिया जाता है। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा को पाँच प्रमुख आयामों सैन्य सुरक्षा, राजनीतिक सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा पर्यावरणीय सुरक्षा में विभाजित किया। उनके अनुसार यदि किसी राष्ट्र की राजनीतिक व्यवस्था अस्थिर हो, आर्थिक संसाधन कमजोर हों या सामाजिक एकता प्रभावित हो जाए, तो उसकी सैन्य शक्ति भी दीर्घकाल तक राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकती। इसलिए आधुनिक सुरक्षा अध्ययन में समग्र सुरक्षा दृष्टिकोण को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा समय के साथ निरंतर विकसित हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की सुरक्षा नीति मुख्यतः सीमाओं की रक्षा, सैन्य क्षमता के विकास तथा गुटनिरपेक्ष विदेश नीति पर आधारित थी। किंतु वर्ष 1962 का भारत–चीन युद्ध, 1965 एवं 1971 के भारत–पाक युद्ध, कारगिल संघर्ष (1999), सीमा पार आतंकवाद तथा 26/11 मुंबई आतंकवादी हमला जैसे घटनाक्रमों ने यह स्पष्ट कर दिया कि राष्ट्रीय सुरक्षा केवल पारंपरिक युद्ध तक सीमित नहीं रह सकती। इसके परिणामस्वरूप भारत ने आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी तंत्र, सीमा प्रबंधन, खुफिया समन्वय तथा सामरिक आधुनिकीकरण को भी राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ राष्ट्रीय

सुरक्षा के लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण बन गई हैं जितनी पारंपरिक सैन्य चुनौतियाँ। साइबर हमले, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन प्रौद्योगिकी, जैविक हथियार, महामारी, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट तथा समुद्री सुरक्षा जैसे विषय आज राष्ट्रीय सुरक्षा के केंद्र में हैं। उदाहरण के लिए, किसी देश के बैंकिंग नेटवर्क, विद्युत ग्रिड, संचार प्रणाली अथवा रक्षा नेटवर्क पर साइबर हमला उसकी सैन्य क्षमता को प्रभावित किए बिना भी गंभीर राष्ट्रीय संकट उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार वैश्विक महामारी ने यह सिद्ध किया कि स्वास्थ्य सुरक्षा भी राष्ट्रीय सुरक्षा का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में आंतरिक सुरक्षा भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। आतंकवाद, नक्सलवाद, उग्रवाद, संगठित अपराध, मादक पदार्थों की तस्करी, साइबर अपराध तथा सांप्रदायिक हिंसा जैसी चुनौतियाँ आंतरिक स्थिरता को प्रभावित करती हैं। इसलिए केंद्र एवं राज्य सरकारों के मध्य समन्वय, खुफिया एजेंसियों की दक्षता, आधुनिक पुलिस व्यवस्था तथा तकनीकी निगरानी प्रणाली राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक हो गई हैं। गृह मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टों में भी यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा में आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा एक–दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। इसी प्रकार भारत की बाह्य सुरक्षा का स्वरूप भी बदल रहा है। चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर तनाव, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, हिंद महासागर में सामरिक प्रतिस्पर्धा तथा इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में बदलते शक्ति–संतुलन ने भारत को अपनी रक्षा नीति का पुनर्गठन करने के लिए प्रेरित किया है। वर्तमान में भारत केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि समुद्री सुरक्षा, अंतरिक्ष सुरक्षा, साइबर सुरक्षा तथा वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं की सुरक्षा को भी राष्ट्रीय हितों का अभिन्न अंग मानता है। यही कारण है कि भारत ने रक्षा आधुनिकीकरण, अंतरराष्ट्रीय रक्षा सहयोग तथा तकनीकी आत्मनिर्भरता पर विशेष बल दिया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (NSC) की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 1998 में स्थापित राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित नीतियों के निर्माण, समन्वय तथा रणनीतिक सलाह प्रदान करने का कार्य करती है। इसके अंतर्गत National Security Advisor (NSA) Strategic Policy Group, National Security Advisory Board (NSAB) तथा National Security Council Secretariat (NSCS) जैसी संस्थाएँ कार्य करती हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से रक्षा, विदेश नीति, आंतरिक सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर समन्वित निर्णय लिए जाते हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा नीति अधिक प्रभावी एवं बहुआयामी बनती है।

समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा केवल रक्षा मंत्रालय या सशस्त्र सेनाओं का विषय नहीं रह गई है। आज यह शासन, आर्थिक नीति, विदेश नीति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, डिजिटल अवसंरचना तथा सामाजिक स्थिरता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय सुरक्षा की यह व्यापक अवधारणा भारत को वैश्विक स्तर पर उभरती चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है तथा रक्षा आधुनिकीकरण की आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक सिद्ध करती है। इसलिए आधुनिक भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा को विकास, सुशासन तथा रणनीतिक स्वायत्तता के साथ जोड़कर देखा जा रहा है, जो भारत की दीर्घकालिक राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण की आधारशिला है।

आधुनिक भारतीय राजनीति और राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का विकास

सुरक्षा की भावना ही मानव को सभ्यता में आबद्ध करने के लिए उत्तरदायी है। मानव आदि काल से ही सर्वोत्कृष्ट सुरक्षा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। राष्ट्र के रूप में संगठित होने के बाद से सुरक्षा की समस्या ने और भी जटिल स्वरूप प्राप्त कर लिया है। राष्ट्र के पारस्परिक सम्बन्धों के प्रति उसके राष्ट्रीय हितों के कारण प्रतिस्पर्धात्मक सम्बन्धों की प्रकृति में एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से निरन्तर खतरे उत्पन्न होते हैं। अतः इस दृष्टि से अनवरत जहाँ कि राष्ट्रों के मध्य भौतिक संघर्ष विद्यमान है, राष्ट्रीय सुरक्षा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती है। राष्ट्र अपनी सुरक्षा के माध्यम से एक ऐसा कवच प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, जिनके द्वारा वे अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा इस संघर्षात्मक वातावरण में अपने प्रतिस्पर्धियों के प्रति कर सकें। राष्ट्रीय सुरक्षा का यह बोध उत्पन्न करती है कि राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा ही राष्ट्रीय सुरक्षा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का विकास देश की राजनीतिक परिस्थितियों, अंतरराष्ट्रीय शक्ति–संतुलन, क्षेत्रीय संघर्षों तथा बदलती वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप निरंतर होता रहा है। प्रारंभिक वर्षों में भारत की विदेश एवं सुरक्षा नीति पर आदर्शवाद, गुटनिरपेक्षता तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की अवधारणाओं का गहरा प्रभाव था। समय के साथ युद्धों, सीमा विवादों, आतंकवाद, परमाणु प्रतिस्पर्धा, समुद्री सुरक्षा, साइबर खतरों तथा इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में उभरती सामरिक चुनौतियों ने भारत को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का पुनर्गठन करने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप आधुनिक भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा

केवल रक्षा मंत्रालय का विषय न रहकर शासन, विदेश नीति, आर्थिक विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा सामरिक कूटनीति का केंद्रीय तत्व बन गई है।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का आधार पंचशील, गुटनिरपेक्षता तथा विश्व शांति की अवधारणाएँ थीं। नेहरू का विश्वास था कि अंतरराष्ट्रीय विवादों का समाधान युद्ध के स्थान पर संवाद और कूटनीति के माध्यम से किया जाना चाहिए। इसी कारण स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में रक्षा व्यय अपेक्षाकृत सीमित रखा गया तथा आर्थिक विकास और संस्थागत निर्माण को प्राथमिकता दी गई। किंतु वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध ने इस दृष्टिकोण की सीमाओं को उजागर कर दिया। इस युद्ध के पश्चात भारत ने रक्षा तैयारियों, सैन्य प्रशिक्षण, सीमा अवसंरचना तथा रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में व्यापक सुधार प्रारंभ किए। यही वह समय था जब राष्ट्रीय सुरक्षा को राजनीतिक प्राथमिकताओं में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।

लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल में वर्ष 1965 का भारत–पाकिस्तान युद्ध भारत की सुरक्षा नीति के लिए एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इस युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए केवल सैन्य शक्ति ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि राजनीतिक नेतृत्व की दृढ़ता, त्वरित निर्णय क्षमता तथा जनता का मनोबल भी उतना ही आवश्यक है। शास्त्री द्वारा दिया गया ष्जय जवान, जय किसानष् का उद्घोष राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय विकास के बीच गहरे संबंध को स्थापित करता है। उनके नेतृत्व में भारतीय सशस्त्र सेनाओं का मनोबल सुदृढ़ हुआ तथा सीमाओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई।

श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा नीति ने अधिक यथार्थवादी और सामरिक स्वरूप ग्रहण किया। वर्ष 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध तथा बांग्लादेश के निर्माण ने भारत की सैन्य क्षमता और राजनीतिक नेतृत्व की निर्णायक भूमिका को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। इसी काल में वर्ष 1974 का पोखरण–I परमाणु परीक्षण (Smiling Buddha) भारत की सामरिक स्वायत्तता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था। इस परीक्षण ने भारत को परमाणु प्रौद्योगिकी संपन्न राष्ट्रों की श्रेणी में स्थापित किया तथा भविष्य की सुरक्षा नीति के लिए दीर्घकालिक आधार प्रदान किया।

1990 के दशक में शीतयुद्ध की समाप्ति, आर्थिक उदारीकरण तथा वैश्वीकरण ने भारत की सुरक्षा नीति को नया आयाम प्रदान किया। आर्थिक सुधारों के साथ–साथ रक्षा आधुनिकीकरण और तकनीकी विकास पर विशेष बल दिया गया। इसी काल में सीमा पार आतंकवाद तथा जम्मू–कश्मीर में उग्रवाद राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरे। इन परिस्थितियों ने भारत को आंतरिक सुरक्षा तंत्र, खुफिया समन्वय तथा सीमा प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रेरित किया ।

अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में ऐतिहासिक परिवर्तन हुए। वर्ष 1998 के पोखरण–ष्प परमाणु परीक्षणों ने भारत को घोषित परमाणु शक्ति के रूप में स्थापित किया। इसके पश्चात भारत ने विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध तथा श्पहले प्रयोग न करनेश की परमाणु नीति को अपनाया। वर्ष 1999 का कारगिल युद्ध भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण अनुभव सिद्ध हुआ। इस युद्ध के बाद कारगिल समीक्षा समिति का गठन किया गया, जिसकी सिफारिशों के आधार पर रक्षा प्रबंधन, खुफिया समन्वय तथा संयुक्त सैन्य योजना में व्यापक सुधार किए गए।

डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारत की सुरक्षा नीति ने आर्थिक विकास और सामरिक साझेदारी के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। इस अवधि में भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता (2008), समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद–रोधी सहयोग तथा रक्षा आधुनिकीकरण को नई गति मिली। किंतु 26/11 मुंबई आतंकवादी हमला भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती सिद्ध हुआ। इसके पश्चात राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) की स्थापना, तटीय सुरक्षा प्रणाली का सुदृढ़ीकरण तथा बहु–एजेंसी समन्वय को अधिक प्रभावी बनाया गया।

वर्ष 2014 के बाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले। इस अवधि में सुरक्षा नीति को सक्रिय, बहुआयामी तथा प्रौद्योगिकी–आधारित स्वरूप प्रदान किया गया। आत्मनिर्भर भारत अभियान, Defence Acquisition Procedure (DAP) 2020, चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ (CDS) का गठन, Department of Military Affairs की स्थापना, सीमा अवसंरचना विकास, रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी, अग्निपथ योजना, इंडो–पैसिफिक रणनीति, तथा रक्षा निर्यात को प्रोत्साहन जैसे अनेक सुधार राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के महत्त्वपूर्ण आयाम बने। साथ ही, गलवान घाटी (2020) की घटना के बाद सीमा सुरक्षा, सैन्य आधुनिकीकरण तथा स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी को और अधिक प्राथमिकता प्रदान की गई।

समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का एक प्रमुख परिवर्तन रक्षा कूटनीति के रूप में भी दिखाई देता है। भारत ने अमेरिका, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, रूस तथा आसियान देशों के साथ रक्षा सहयोग को सुदृढ़ किया है। क्वाड, इंडो–पैसिफिक रणनीति, मालाबार नौसैनिक अभ्यास, तथा हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सहयोग ने भारत की सामरिक स्थिति को और अधिक मजबूत किया है। इन पहलों ने भारत की विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया है।

रक्षा आधुनिकीकरणः आवश्यकता, उद्देश्य एवं प्रमुख पहलें

आधुनिक युग में राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियाँ निरंतर जटिल और बहुआयामी होती जा रही हैं। पारंपरिक युद्धों के साथ–साथ साइबर हमले, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष आधारित निगरानी, हाइब्रिड युद्ध, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध तथा सूचना युद्ध जैसे नए खतरे रक्षा व्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल पारंपरिक सैन्य क्षमता किसी राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकती। इसलिए आधुनिक रक्षा प्रणाली का तकनीकी रूप से उन्नत, समन्वित, आत्मनिर्भर तथा तीव्र प्रतिक्रिया देने वाला होना आवश्यक है। भारत ने भी बदलती वैश्विक परिस्थितियों तथा क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए रक्षा आधुनिकीकरण को राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का प्रमुख आधार बनाया है। भारतीय रक्षा आधुनिकीकरण का प्रमुख उद्देश्य केवल आधुनिक हथियारों की खरीद तक सीमित नहीं है, बल्कि सशस्त्र सेनाओं की युद्ध क्षमता, तकनीकी दक्षता, संयुक्त सैन्य संचालन, स्वदेशी रक्षा उत्पादन तथा भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों के अनुरूप सैन्य संरचना का विकास करना भी है। इसके अंतर्गत थल सेना, नौसेना तथा वायुसेना के मध्य बेहतर समन्वय, नेटवर्क–केंद्रित युद्ध प्रणाली, आधुनिक संचार प्रणाली, उपग्रह आधारित निगरानी, साइबर सुरक्षा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा प्रणालियों के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। इस प्रकार रक्षा आधुनिकीकरण केवल सैन्य उपकरणों के आधुनिकीकरण का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की समग्र रणनीति का अभिन्न अंग है।

भारतीय रक्षा सुधारों में Defence Acquisition Procedure (DAP) 2020) एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहल है। यह प्रक्रिया रक्षा खरीद प्रणाली को अधिक पारदर्शी, समयबद्ध तथा स्वदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से लागू की गई। DAP–2020 में ठनल (Indian– IDDM, Buy (Indian) तथा Buy and Make (Indian) जैसी श्रेणियों को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई है, ताकि रक्षा उपकरणों के आयात पर निर्भरता कम हो और देश में ही आधुनिक रक्षा तकनीकों का विकास हो सके। इस नीति ने भारतीय निजी उद्योग, रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों तथा स्टार्टअप कंपनियों के लिए नए अवसर उपलब्ध कराए हैं।

रक्षा आधुनिकीकरण की दिशा में भारत सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत रक्षा क्षेत्र को विशेष प्राथमिकता प्रदान की गई है। इस नीति का उद्देश्य भारत को रक्षा उपकरणों का आयातक राष्ट्र बनने के स्थान पर एक प्रमुख रक्षा विनिर्माता तथा निर्यातक राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इसी उद्देश्य से रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दिया गया, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) की सीमा में वृद्धि की गई तथा अनेक रक्षा उपकरणों को Positive Indigenisation Lists के अंतर्गत सम्मिलित किया गया, जिनका आयात चरणबद्ध रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है। परिणामस्वरूप भारतीय उद्योगों को स्वदेशी रक्षा प्रणालियों के विकास हेतु प्रोत्साहन मिला है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। DRDO द्वारा विकसित अग्नि एवं पृथ्वी मिसाइल श्रृंखला, आकाश वायु रक्षा प्रणाली, ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल, अस्त्र हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल, पिनाका मल्टी–बैरल रॉकेट प्रणाली, तेजस हल्का लड़ाकू विमान (LCA), अर्जुन मुख्य युद्धक टैंक तथा विभिन्न रडार एवं इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियाँ भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमता को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई हैं। इन परियोजनाओं ने भारत की सामरिक स्वायत्तता को मजबूत किया है तथा विदेशी हथियारों पर निर्भरता को कम करने में सहायता की है। रक्षा सुधारों की दृष्टि से चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ का पद सृजित किया जाना भारतीय सैन्य इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण सुधार माना जाता है। वर्ष 2020 में इस पद की स्थापना का उद्देश्य तीनों सेनाओं थल सेना, नौसेना एवं वायुसेना के मध्य संयुक्त योजना, संसाधनों के समुचित उपयोग तथा एकीकृत सैन्य कमान प्रणाली को विकसित करना था। इसके साथ ही Department of Military Affairs (DMA) की स्थापना कर सैन्य मामलों के प्रशासनिक समन्वय को और अधिक प्रभावी बनाया गया। वर्तमान में Integrated Theatre Commands की अवधारणा पर भी कार्य किया जा रहा है, जिससे भविष्य के युद्धों में संयुक्त सैन्य अभियानों की क्षमता और अधिक सुदृढ़ होगी।

भारत ने रक्षा निर्यात के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। पिछले कुछ वर्षों में भारत से मिसाइल प्रणालियाँ, तटीय निगरानी प्रणाली, गश्ती नौकाएँ, रडार, हेलीकॉप्टर के पुर्जे तथा अन्य रक्षा उपकरण अनेक देशों को निर्यात किए गए हैं। रक्षा मंत्रालय के अनुसार भारत का रक्षा निर्यात निरंतर बढ़ रहा है, जो रक्षा उत्पादन

में आत्मनिर्भरता तथा वैश्विक रक्षा बाजार में भारत की बढ़ती भूमिका का संकेतक है । रक्षा आधुनिकीकरण का एक महत्त्वपूर्ण आयाम साइबर एवं अंतरिक्ष सुरक्षा भी है। भारत ने क्ममिदबम ब्लइमत ।हमदबल, क्ममिदबम ैचंबम ।हमदबल तथा क्ममिदबम ैचंबम त्मेमंतबी व्तहंदपेंजपवद जैसी संस्थाओं की स्थापना कर आधुनिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। आज उपग्रह आधारित संचार, वास्तविक समय की निगरानी, ड्रोन प्रतिरोधी प्रणाली, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा क्वांटम प्रौद्योगिकी भविष्य के युद्धों की दिशा निर्धारित कर रहे हैं। इसलिए भारत इन क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास को विशेष प्राथमिकता दे रहा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत का रक्षा आधुनिकीकरण केवल सैन्य शक्ति के विस्तार का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, तकनीकी आत्मनिर्भरता, औद्योगिक विकास तथा रणनीतिक स्वायत्तता का व्यापक कार्यक्रम है। आधुनिक भारतीय राजनीति ने रक्षा सुधारों को राष्ट्रीय विकास, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा वैश्विक शक्ति–संतुलन से जोड़कर देखा है। परिणामस्वरूप भारत आज रक्षा उत्पादन, सैन्य प्रौद्योगिकी, संयुक्त सैन्य संरचना तथा सामरिक क्षमता के क्षेत्र में तीव्र गति से प्रगति कर रहा है, जो भविष्य में उसे एक सशक्त एवं आत्मनिर्भर रक्षा शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

आत्मनिर्भर भारत, रक्षा उत्पादन, रक्षा निर्यात एवं तकनीकी नवाचार

भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा की सुदृढ़ता केवल आधुनिक हथियारों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि देश अपनी रक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति किस सीमा तक स्वदेशी संसाधनों एवं तकनीकी क्षमता के माध्यम से कर सकता है। लंबे समय तक भारत विश्व के सबसे बड़े रक्षा आयातक देशों में सम्मिलित रहा, जिसके कारण विदेशी रक्षा उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता बनी रही। इससे न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा पर रणनीतिक दबाव पड़ता था, बल्कि विदेशी मुद्रा व्यय, रखरखाव लागत तथा आपूर्ति शृंखला पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। इसी संदर्भ में आधुनिक भारतीय राजनीति ने श्आत्मनिर्भर भारतश की अवधारणा को राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रक्षा नीति के साथ जोड़ते हुए रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता को सर्वोच्च प्राथमिकताओं में सम्मिलित किया है।

वर्ष 2020 में घोषित आत्मनिर्भर भारत अभियान ने रक्षा क्षेत्र में व्यापक नीतिगत परिवर्तन किए। इस अभियान का उद्देश्य केवल आयात प्रतिस्थापन नहीं है, बल्कि भारत को रक्षा अनुसंधान, विनिर्माण, निर्यात तथा उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना भी है। सरकार ने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा की दीर्घकालिक मजबूती तभी संभव है जब देश अपनी रक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हो। इसी उद्देश्य से रक्षा क्षेत्र में निजी उद्योग, स्टार्टअप, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों तथा नवाचार आधारित उद्योगों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया।

रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची जारी की गई। इन सूचियों में सैकड़ों ऐसे रक्षा उपकरणों, हथियार प्रणालियों, मिसाइलों, रडारों, संचार प्रणालियों तथा अन्य सैन्य उपकरणों को सम्मिलित किया गया है जिनका आयात चरणबद्ध रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है। इन उपकरणों का निर्माण अब भारतीय उद्योगों द्वारा किया जा रहा है। इस नीति का उद्देश्य घरेलू रक्षा उद्योग को प्रोत्साहन देना, विदेशी निर्भरता कम करना तथा स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास को गति प्रदान करना है। रक्षा क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित करने हेतु प्ददवअंजपवदे वित क्ममिदबम म्बमससमदबम (पक्म्) योजना प्रारंभ की गई। इस पहल के माध्यम से स्टार्टअप, नवाचार आधारित कंपनियों, विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थानों को रक्षा संबंधी आधुनिक तकनीकों के विकास हेतु वित्तीय एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन प्रणाली, स्वायत्त हथियार, रोबोटिक्स, साइबर सुरक्षा, क्वांटम संचार तथा उन्नत सेंसर प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। पक्म् ने रक्षा क्षेत्र में निजी भागीदारी तथा नवाचार की संस्कृति को सुदृढ़ किया है, जिससे भविष्य की युद्ध आवश्यकताओं के अनुरूप स्वदेशी समाधान विकसित हो रहे हैं।

रक्षा विनिर्माण को गति प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने उत्तर प्रदेश एवं तमिलनाडु रक्षा औद्योगिक गलियारे की स्थापना की। इन रक्षा गलियारों का उद्देश्य रक्षा उद्योग के लिए आवश्यक अवसंरचना का विकास, निवेश आकर्षित करना, अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन देना तथा बड़े उद्योगों और सूक्ष्म एवं मध्यम उद्यमों के मध्य औद्योगिक समन्वय स्थापित करना है। इन औद्योगिक गलियारों के माध्यम से रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में रोजगार सृजन, तकनीकी हस्तांतरण तथा क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को भी गति मिली है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (क्त्क्ब्) भारतीय रक्षा आत्मनिर्भरता का प्रमुख आधार है। क्त्क्ब् ने पिछले कुछ दशकों में अनेक उन्नत सैन्य प्रणालियों का सफल विकास किया है। अग्नि एवं पृथ्वी मिसाइल श्रृंखला, आकाश वायु रक्षा प्रणाली, अस्त्र हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल, नाग टैंक रोधी मिसाइल, पिनाका

मल्टी बैरल रॉकेट प्रणाली, रुद्रम एंटी–रेडिएशन मिसाइल तथा विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियाँ भारत की स्वदेशी अनुसंधान क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विशेष रूप से भारत–रूस के संयुक्त सहयोग से विकसित ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल आज विश्व की सबसे उन्नत सामरिक मिसाइल प्रणालियों में गिनी जाती है तथा इसका निर्यात भी प्रारंभ हो चुका है।

रक्षा उत्पादन में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL), भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL), भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (BDL) तथा अन्य रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। HAL द्वारा निर्मित LCA तेजस, लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर (LCH) प्रचंड, एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर तथा लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर भारतीय वायुसेना एवं थलसेना की युद्ध क्षमता को सुदृढ़ कर रहे हैं। BEL आधुनिक रडार, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली, संचार उपकरण एवं निगरानी प्रणाली के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जबकि ठक्स- विभिन्न मिसाइल प्रणालियों के उत्पादन में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इन संस्थानों की उपलब्धियाँ भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुई हैं।

पिछले कुछ वर्षों में भारत के रक्षा निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत अब केवल रक्षा उपकरणों का आयातक नहीं रहा, बल्कि अनेक देशों को मिसाइल प्रणाली, रडार, गश्ती नौकाएँ, हेलीकॉप्टर के कल–पुर्जे, निगरानी प्रणाली तथा रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स का निर्यात भी कर रहा है। विशेष रूप से फिलीपींस को ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली का निर्यात भारतीय रक्षा उद्योग की वैश्विक स्वीकार्यता का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार हाल के वर्षों में भारत का रक्षा निर्यात कई गुना बढ़ा है, जो आत्मनिर्भर रक्षा नीति की सफलता का संकेत देता है। इससे न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित हो रही है, बल्कि भारत की सामरिक कूटनीति एवं वैश्विक प्रतिष्ठा भी सुदृढ़ हो रही है।

तकनीकी नवाचार वर्तमान रक्षा आधुनिकीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम बन चुका है। आधुनिक युद्धों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग, स्वायत्त ड्रोन, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष आधारित निगरानी, उपग्रह संचार तथा बिग डेटा विश्लेषण की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। भारत ने इन क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास को विशेष प्राथमिकता प्रदान की है। डिफेन्स स्पेस एजेंसी, डिफेन्स साइबर एजेंसी तथा विभिन्न रक्षा अनुसंधान संस्थानों के माध्यम से भविष्य की युद्ध आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीकी क्षमता का विकास किया जा रहा है। इससे भारत की सैन्य दक्षता के साथ–साथ रणनीतिक स्वायत्तता भी सुदृढ़ हो रही है।

समकालीन भारतीय राजनीति में आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन केवल आर्थिक नीति का अंग नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सामरिक स्वतंत्रता तथा वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करने का एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। स्वदेशी अनुसंधान, आधुनिक प्रौद्योगिकी, निजी क्षेत्र की भागीदारी, रक्षा निर्यात तथा नवाचार आधारित रक्षा उद्योग के माध्यम से भारत एक ऐसे रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है, जो भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम हो। यह परिवर्तन आधुनिक भारतीय राजनीति की दूरदर्शी रक्षा नीति तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रमाण है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा आधुनिकीकरण परस्पर पूरक एवं अविभाज्य तत्व हैं। एक ओर प्रभावी राजनीतिक नेतृत्व ने सुरक्षा नीति को दीर्घकालिक दृष्टि प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर रक्षा सुधारों, तकनीकी आत्मनिर्भरता, स्वदेशी अनुसंधान, सैन्य आधुनिकीकरण तथा सामरिक कूटनीति ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को अधिक सुदृढ़, विश्वसनीय एवं भविष्य उन्मुख बनाया है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष रक्षा, मानव रहित युद्ध प्रणाली तथा उभरती प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में निरंतर निवेश, अनुसंधान एवं नवाचार भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की सफलता के प्रमुख निर्धारक होंगे। इसलिए आवश्यक है कि भारत रक्षा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को निरंतर गति प्रदान करते हुए स्वदेशी तकनीकी क्षमता, रक्षा उत्पादन, वैज्ञानिक अनुसंधान तथा सामरिक साझेदारियों को और अधिक सुदृढ़ बनाए। यही दृष्टिकोण भारत को एक सुरक्षित, आत्मनिर्भर, सक्षम एवं उत्तरदायी वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial,

personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ–

1. Ministry of Defence, Annual Report 2024–25, https://mod.gov.in; Defence Acquisition Procedure 2020.
2. Defence Production and Export Promotion Policy, https://www.mod.gov.in
3. Barry Buzan, People, States and Fear: An Agenda for International Security Studies in the Post-Cold War Era, 2nd Edition, Lynne Rienner Publishers, 1991, pp. 18–31
4. Barry Buzan, People, States and Fear, 1991, pp. 19–24
5. Ministry of Home Affairs, Annual Report 2023–24, https://www.mha.gov.in; K. Subrahmanyam, India's National Security, IDSA Publications.
6. National Cyber Security Policy, Government of India, 2013, https://www.meity.gov.in; National Security Strategy Discussions, National Security Council Secretariat.
7. Ministry of Home Affairs, Annual Report 2023–24, https://www.mha.gov.in.
8. Indian Navy, Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy, 2015, pp. 1–15.
9. https://www.nscs.gov.in
10. https://dae.gov.in
11. Kargil Review Committee Report, 2000, https://archive.pib.gov.in
12. National Investigation Agency Act, 2008; Ministry of Home Affairs, Annual Report 2009–10, https://www.mha.gov.in
13. Ministry of Defence, Defence Acquisition Procedure 2020, https://www.mod.gov.in; Ministry of Defence, Annual Report 2024–25, https://mod.gov.in)
14. Indian Navy, Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy, 2015, pp. 1–25
15. Indian Army, Year End Review 2024; Ministry of Defence, Annual Report 2024–25, https://mod.gov.in
16. Defence Acquisition Procedure 2020, Chapter II, https://www.mod.gov.in
17. Positive Indigenisation Lists, https://www.mod.gov.in
18. Creation of the Department of Military Affairs, https://mod.gov.in
19. Ministry of Defence, Annual Report 2024–25, https://mod.gov.in
20. Innovations for Defence Excellence (iDEX), Ministry of Defence, https://idex.gov.in

Cite this Article

'मुकुल कुमार', "आधुनिक भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा आधुनिकीकरणः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:6, June 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."